K. Nand M.A I Sem 3 18/01/2022

में O के प्रति P का व्यवहार कैसा होगा, यह P के ऊपर उसकी प्रत्याशा पर आधारित है। इस प्रकार P तथा O के बीच होने वाली पारस्परिक क्रिया का स्वरूप दोनों की प्रत्याशाओं तथा उनके अभिगत व्यवहारों के स्वरूप से निर्धारित होगा।

(iii) जब P तथा O एक दूसरे के प्रति भविष्यवाणी (Prediction) करने में सफल होते हैं तो पारस्परिक क्रिया सरल (simple) बन जाती है, अन्यथा जटिल (complex) तथा कठिन (difficult) बन जाती है। जैसे - दो पुराने मित्रों के बीच पारस्परिक क्रिया सरल होती है, जबकि दो नये मित्रों के बीच यह कठिन होती है

(iv) जब P तथा O के बीच समान समझदारी नहीं होती तो भविष्यवाणी करना कठिन बन जाता है, फलतः उनके बीच पारस्परिक क्रिया सहज तथा स्वाभाविक नहीं बन पाती है, बल्कि जटिल एवं कठिन बन जाती है। यदि P यह समझ कर अपने हाथों को O की ओर बढ़ाये कि हाथ मिलाना (hand shaking) अभिवादन (greeting) का प्रतीक (symbol) है, किन्तु O इस अर्थ से परिचित न हो तो अवश्य ही P का यह व्यवहार बेअसर सिद्ध होगा। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि हमारे सामाजिक व्यवहारों का नियंत्रण तथा संचालन हमारी पारस्परिक प्रत्याशाओं (mutual expectations) के आलोक में होता है।

(v) व्यवहार विश्लेषण के प्रकार (Types of analysis of behaviour) - पारस्परिक क्रिया (interaction) में

K. Nand M.A I Sem's 18/01/2022

Date............

Expt. No............

Page No............

भाग लेने वाले व्यक्तियों के व्यवहार के सम्बन्ध में भविष्यवाणी (Predictions) करना संभव हो सकता है।

सेकर्ड तथा बैकमैन (Secord and Backman, 1974) ने पारस्परिक क्रिया अथवा इसमें भाग लेने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए इसका विश्लेषण (analysis) निम्नांकित तीन तन्त्रों (systems) में किया है-

1. व्यक्तित्व तन्त्र (Personality system) - व्यवहार का एक मुख्य निर्धारक व्यक्तित्व तन्त्र है। पारस्परिक क्रिया (Interaction) के समय किसी व्यक्ति का व्यवहार कैसा होगा, यह बात उस व्यक्ति के व्यक्तित्व तन्त्र पर निर्भर करती है। अन्य बातें समान रहने पर भी व्यक्तित्व तन्त्र में अन्तर होने के कारण पारस्परिक क्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों का व्यवहार भिन्न बन जाता है। अतः व्यक्ति के व्यवहार के समुचित ज्ञान के लिए व्यक्तित्व तन्त्र के रूप में उसका विश्लेषण आवश्यक है।

व्यक्तित्व तन्त्र (Personality system) के अन्तर्गत व्यक्तित्व शीलगुणों (Personality traits), मनोवृत्तियों (attitudes), आवश्यकताओं (Needs), भावों (Feelings), संवेगों (emotions), संज्ञानों (cognitions), आदतों (habits) आदि की गणना की जाती है। स्मरण रखना चाहिए कि व्यक्तित्व तन्त्र, वास्तव में इन सभी कारकों (factors) या चरों (variables) का योगफल (sum total) नहीं है बल्कि एक विशेष संगठन (organization) है। इस संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व एक अपूर्व तन्त्र (unique system) के रूप में काम करने लगता है। जैसे, आक्रमणशील व्यक्तित्व (aggressive Personality

Teacher's Signature : ....

P.T.O